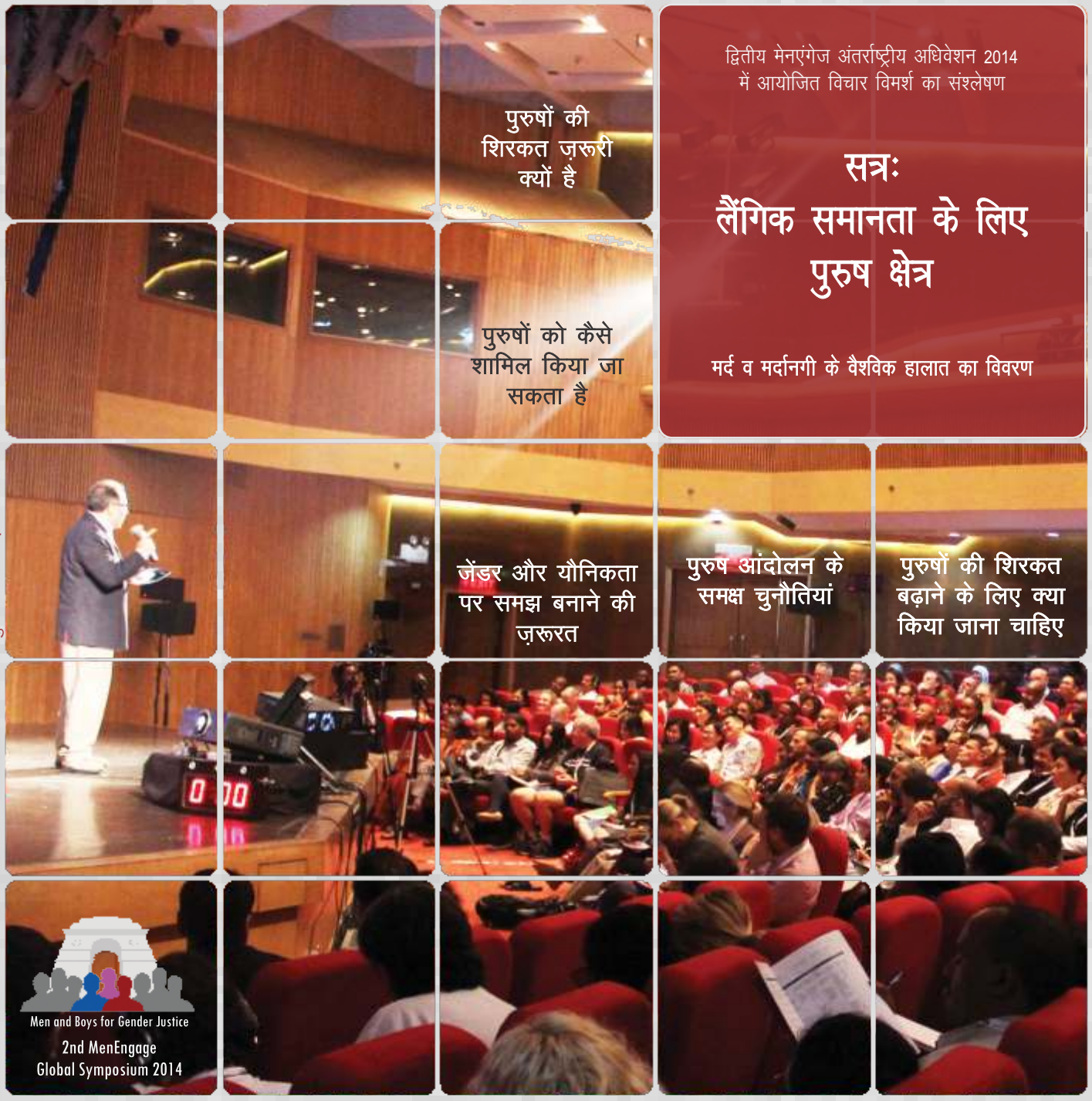

द्वितीय मेनएंगेज अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन 2014
में आयोजित विचार विमर्श का संश्लेषण

सत्रः
लैंगिक समानता के लिए पुरुष क्षेत्र

मर्द व मर्दानगी के वैश्विक हालात का विवरण

श्रेणी 'मर्दानगी को चुनौती और नई वास्तविकताओं को पहचानना'

केवल **निजी वितरण** के लिए

पुरुषों के लिए "होमवर्क"

- पिता का सकारात्मक जुड़ाव
- महिलाओं व लड़कियों को नुकसान पहुंचाने वाले व्यवहारों तथा उनके खिलाफ़ होने वाली हिंसा के हर रूप को पूरी तरह ख़त्म करने की ज़िम्मेदारी उठाना
- पुरुषों व महिलाओं के बीच बिना वेतन देखभाल के काम का समान बंटवारा
- उन फ़ैसला लेने वाले पदों से पीछे हटना जिनमें औरतों का प्रतिनिधित्व न हो
- भेदभावपूर्ण कानूनों को रद्द करना तथा महिला सहयोगपूर्ण कानून बनाना
- मालिक महिलाओं की आर्थिक सशक्तता सुनिश्चित करने की ज़िम्मेदारी उठाएं

द्वितीय मेनएंगेज अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन 2014 की शुरूआती प्लेनरी सत्र में विश्व स्तरीय वक्ताओं ने लैंगिक समानता के लिए पुरुष क्षेत्र विषय पर अपने विचार रखे। इस सत्र ने नई दिल्ली में नवम्बर 10–13, 2014 में आयोजित अधिवेशन, जिसमें 95 देशों से 1200 लोगों ने भाग लिया, के आने वाले दिनों के कार्यक्रम की नींव रखी। यूएन विमेन की फुमज़िले म्लुम्बा न्गकक ने इस आयोजन की बात करते हुए कहा ''मेरी नज़र में यह आयोजन दिशा बदलने वाला 'गेमचेंजिंग' कार्यक्रम है क्योंकि यहां मौजूद लोगों की संख्या और उन देशों को देखते हुए जिनका ये प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, मैं अपेक्षा करती हूं कि उम्मीद के बीज अब पूरी दुनिया में बोए जा सकेंगें।''

''ब्रिंगिंग मेन टू द टेबलः'' लाभ व चुनौतियां

पुरुषों को शामिल किए जाने वाले वैश्विक संदर्भ को प्रमुख रखते हुए, यूएन विमेन की कार्यकारी निदेशक, फुमज़िले म्लुम्बा न्गकक ने स्पष्ट किया कि 2015 के बाद के विकास एजेंडा में स्वास्थ्य, शिक्षा, अमन व आर्थिक कल्याण को बेहतर बनाने के लिए लैंगिक समानता को बतौर बुनियादी ज़रूरत के रूप में देखा जा रहा है। पूरी दुनिया में लैंगिक समानता को अच्छे विकास आंकड़े हासिल करने के लिए ज़रूरी 'पूर्वशर्त' के रूप में आंका जा रहा है। इस बात में शक की कोई गुंजाइश नहीं रह जाती कि सबको सीमित करने वाले लैंगिक पूर्वाग्रहों को तोड़ने के लिए पुरुषों व लड़कों को सामने लाना बेहद महत्त्वपूर्ण है। इसके बावजूद महिलाओं के विरुद्ध हिंसा व्याप्त है और उसे बर्दाश्त भी किया जाता है। यह भेदभाव के इस सबसे अमानवीय रूप को मिटाने के काम को बेहद चुनौतीपूर्ण बना देता है।

फुमज़िले म्लुम्बा न्गकक

सामाजिक व सांस्कृतिक मानकों को एक सकारात्मक प्रभाव के तौर पर इस्तेमाल करने का सुझाव देते हुए म्लुम्बा न्गकक ने हिदायत दी कि ''लैंगिक समानता एक बदलाव लाने वाली कोशिश है जिसमें पुरुषों को पितृसत्तात्मक सुविधाएं छोड़नी होंगी व सत्ता की चाल पर सवाल उठाने होंगे।'' उन्होंने इस विषय पर काम शुरु करने का इरादा रखने वाले पुरुषों को कुछ खास काम करने को दिए। (देखें कवर पेज 'पुरुषों के लिए ''होमवर्क'')

एक वास्तविकता–जांच

लैंगिक समानता के लिए पुरुष सत्र की सफ़लता का जश्न मनाते हुए तथा इस क्षेत्र में बढ़ती रुचि व इस विषय पर विकसित नीति व कार्यक्रम संबंधी पद्धतियों पर विचार करते हुए प्रोमंडो व मेनएंगेज अलायंस के गैरी बार्कर ने इन सफ़लताओं की सराहना करने के साथ–साथ एक वास्तविकता जांच का संतुलन भी बनाए रखने की कोशिश करी।

मौजूदा पितृसत्तात्मक हालातों को देखते हुए उन्होंने पुरुषों के लैंगिक समानता रवैयों पर एक बहु–देशीय अध्ययन के नतीजे भी बांटे और आगे के लम्बे रास्ते की ओर ध्यान खींचा। उन्होंने कहा कि हालांकि हाल ही में पुरुषों के व्यवहार में मानदंड संबंधी बदलाव देखने को मिले हैं और कुछ ख़ास किस्म के पुरुष नियमित रूप से लैंगिक समानता के मानक को स्वीकार भी कर रहे हैं, फिर भी महिलाओं के ख़िलाफ़ हिंसा में कोई कमी नहीं आई है। इसमें सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण प्रभावशाली कारक जो उभर कर सामने आया था वह यह कि लैंगिक हिंसा करने वाले पुरुषों ने खुद भी हिंसा के अनेक रूपों का सामना किया था। बार्कर ने कहा, ''हम पुरुषों व लड़कों के व्यवहार के लिए कोई बहाने नहीं बना रहे हैं। पर लड़कों के शरीर पर होने वाली हिंसा लड़कियों व महिलाओं के शरीर पर की जाने वाली हिंसा के रूप में वापस आती है।''

गैरी बार्कर

पुरुषों के जीवन पर एक नज़र

उन्होंने कहा कि अच्छी खबर यह है कि हमारे पास बहुत सारे ऐसे उदाहरण–विचार हैं कि सकारात्मक बदलाव लाने के लिए क्या काम कर सकता है। उदाहरण के लिए समानता की दिशा में बढ़ने के लिए पुरुषों की कमज़ोरियों जैसे संघर्षों के कारण उनमें उच्च मृत्युदर (जिनमें हत्या व आत्महत्या भी शामिल हैं) आदि का भी निरीक्षण करना होगा। पुरुषों के सामने एक बड़ी चुनौती आर्थिक अस्थिरता के कारण गरीबी व बेराज़गारी की है। जिन देशों में पुरुष हत्या दर कम देखी गई है वहां सामाजिक असमानताओं की दर में भी कमी पाई गई है। सभी पक्षों को एक साथ देखते हुए बार्कर का विचार था कि एक कल्याणकारी राज्य में जहां अच्छी स्वास्थ्य, न्याय और सामाजिक सेवाएं मौजूद हों वहां लैंगिक समानता लाने वाले बदलाव बेहतर लाए जा सकते हैं।

उन्होंने विशेष रूप से कार्यकर्ताओं को चेतावनी दी कि वे ऐसा बिलकुल न सोचें कि ''क्या हम पुरुषों के लिए काम कर रहे हैं या फिर महिलाओं के लिए?'' बार्कर ने ये भी दर्ज किया कि ''आंदोलन में जीत हासिल करने के लिए यहां पुरुषों के और वहां औरतों के कार्यक्रमों पर गिनती करने की ज़रूरत नहीं होती बल्कि उस मानवता की तलाश करने की ज़रुरत होती है जो हमें बेहतर समानता की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करे।''

दो "कठिन" मुद्दे

बार्कर ने 2015 के बाद के विकास लक्ष्य पर ज़ोर दिया जिसके अंतर्गत पुरुषों को घर में अपने हिस्से का देखभाल का काम करना होगा जिससे महिलाएं समान वेतन और रोज़गार हासिल करने के लिए घर से बाहर कदम बढ़ा सकें।

एक दूसरा मुद्दा जो उन्होंने उजागर किया वह यौनिक व प्रजनन स्वास्थ्य में पुरुषों की भागीदारी के कमी संबंधी था। (देखें बॉक्स: एक गैर–बराबर बोझ)। विश्व की सबसे बड़ी परिवार नियोजन पहल एफ़पी 20–20 में महिलाओं के लिए प्रभावशाली गर्भनिरोधक लक्ष्य तय किए गए हैं, लेकिन पुरुषों के लिए कोई भी लक्ष्य तय नहीं किया गया। बार्कर ने कहा, "यह महिलाओं और पुरुषों के साथ धोखा है।"

गर्भनिरोधकों का इस्तेमाल– एक गैर–बराबर बोझ

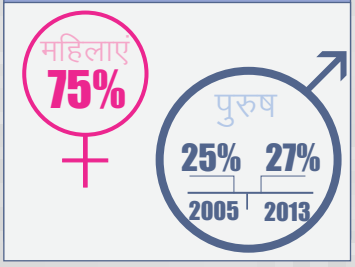

"ज़ीरो–सम गेम" (कुल जोड़ शून्य) को "विन–विन गेम" (जीत की स्थिति) में बदलना

पुरुषों को नारीवादी बातचीत में शामिल कैसे किया जाए? न्यूयार्क स्टेट यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर माईकल किमेल ने सबसे पहले रूकावटों की पहचान की और फिर पुरुषों को किस तरह शामिल किया जा सकता है इस पर बातचीत की।

किमेल के अनुसार, सबसे पहली रुकावट 'पुरुष' (मेन) शब्द है– (विमेन) 'महिला' शब्द जेंडर को प्रत्यक्ष बनाता है। "जब मैं 'जेंडर' कहता हूं तो आप महिलाओं के बारे में सोचते हैं। अधिकांश पुरुष नहीं जानते कि जेंडर उनके लिए भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि महिलाएं उसे अपने लिए समझती हैं। ज़्यादातर उनको यह भी नहीं पता होता कि उनका भी जेंडर है। जेंडर पुरुषों के लिए अदृश्य रहता है और इसके पीछे एक राजनीति है। इसलिए सबसे पहला काम है जेंडर को पुरुषों के लिए प्रत्यक्ष बनाना।"

माईकल किमेल

दूसरी रुकावट है 'समानता' शब्द। सत्ता छोड़ देने का अर्थ पुरुषों की समझ में नहीं आता क्योंकि वे मानते हैं कि महिलाएं व पुरुष एक समान स्तर पर हैं। ज़रा सा भी झुकाव होने पर प्रतिक्रिया होती है– "यहां तो विपरीत भेदभाव है।" हक़दारी की भावना के चलते पुरुष यह मान लेते हैं कि लैंगिक समानता एक 'ज़ीरो–सम' (कुल जोड़ शून्य) खेल है जिसमें अगर औरतें जीतती हैं तो पुरुष हारते हैं। किमेल के अनुसार हमारा दूसरा काम है कोई अन्य तरीका अपनाकर इस काम को आगे बढ़ाना।

बातचीत की शुरुआत कैसे करें?

पुरुषों के साथ बातचीत उन्हें यह दिखाते हुए की जा सकती है कि समानता उनके अपने हित में है। किमेल ने स्पष्ट किया कि शोध से यह साबित हुआ है कि लैंगिक समानता 'ज़ीरो–सम' (कुल जोड़ शून्य) खेल नहीं बल्कि 'विन–विन' यानी जीत की परिस्थिति है। जब पुरुष बच्चों की देखभाल और घरेलू कामों में मदद करते हैं तो न सिर्फ उनकी पत्नी व बच्चे खुश और स्वस्थ रहते हैं बल्कि उन्हें बढ़ावा देने के लिए एक अन्य वजह भी होती है – पत्नी के साथ ज़्यादा यौन क्रिया के अवसर!

"मेरा विश्वास है हम पुरुषों को यह कहकर शामिल कर सकते हैं कि यह संवाद उनके बारे में भी है," किमेल ने अपना सुझाव दिया।

हालांकि उन्होंने चेतावनी भी दी कि कभी–कभी पुरुष नारीवादी जगहों पर कुछ इस तरह धमक पड़ते हैं जैसे कह रहे हों – "धन्यवाद जी; अब यहां से संवाद को आगे हम ले जायेंगे" – पुरुषों को इस स्थिति तक बिल्कुल ही नहीं पहुंचने दिया जाना चाहिए। वे सुरक्षा प्रदान करने वाले या पालनकर्ता की भूमिका में नहीं होने चाहिए – उनकी मौजूदगी सही वजहों के लिए होनी चाहिए।

जेंडर और यौन अधिकारों का आमना–सामना

मानव अधिकार वकील विवेक दीवान ने इस बात पर ज़ोर दिया कि नीति निर्माताओं व अन्य लोगों को यौनिक विविधताओं व वर्ग, संस्कृति, धर्म व शरीर की राजनीति से उसके आपसी संबंध की समझ से लैस होना चाहिए और उनको उम्मीद है कि इस अधिवेशन में इन विषयों पर बातचीत की जाएगी। भारत में बहुसंख्यकों के नज़रिए को वैधता प्रदान करने के लिए सांडिमी–विरोधी कानून को कायम रखने के दुखद फ़ैसले के आने के बावजूद दीवान को सर्वोच्च न्यायालय के हाल के कथन में उम्मीद नज़र आती है जब ट्रांसजेंडर (विषमलिंगी) व्यक्तियों के मौलिक अधिकारों को मान्यता देते हुए न्यायालय ने यह 'आदेश' पारित किया:

हमारी नैतिक हार समाज द्वारा अलग–अलग लैंगिक पहचानों और अभिव्यक्तियों को सम्मिलित करने की अनिच्छा में निहित है– इस नज़रिए में हमें बदलाव लाना होगा। एक देश के विकास का सही मानक उसकी आर्थिक बढ़त नहीं, बल्कि उसकी मानवीय गरिमा है – एक व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास में खुद को अनेक तरीक़ों से अभिव्यक्त करने का अधिकार भी शामिल होता है। किसी भी व्यक्ति की लैंगिक पहचान को मान लेना उसके गरिमा के मौलिक अधिकार का मर्म होता है।

विवेक दीवान

दलील का विस्तार

सत्र संचालक शिरीन अल–फ़ेकी, जो एक प्रोमंडो फ़ेलो और लेखिका भी हैं, ने यह तर्क सामने रखा कि धार्मिक कट्टरवाद न केवल महिलाओं की जगह तय कर रहा है बल्कि यह समाज में पुरुषों की भूमिका और मर्दानगी से जुड़े विचारों को भी आकार दे रहा है। इस पर अपनी प्रतिक्रिया ज़ाहिर करते हुए म्लुम्बा–न्गकक ने कहा कि यह ज़रूरी है कि **इस सच्चाई को सामने लाया जाए कि** किस तरह धर्म का इस्तेमाल दमनकारियों के हितों के विस्तार के लिए किया जा रहा है। उन्होंने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि समाज की प्रभावशाली प्रगतिशील आवाज़ों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए जिससे लैंगिक समानता का विचार मज़बूती से जड़ पकड़ सके।

यह संश्लेषण **उर्दू, बांगला, अंग्रेज़ी, पुर्तगाली, स्पेनिश** और **फ्रेंच** में भी उपलब्ध है

"लॉस ऑफ़ माई पाई" (सुविधाओं का नुक़सान होना) व "कुक्ड अप आईडियाज़" पर बातचीत

प्लेनरी पेनल (सत्र) ने कुछ महिला समूहों द्वारा पुरूषों की लैंगिक समानता लाने में हिस्सेदारी बढ़ने पर विरोध करना तथा कई देशों में समानता के प्रचार को एक 'बाहरी' सिद्धांत की तरह देखे जाने से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की

अल–फ़ेकी : कुछ महिला अधिकार संगठन पुरुषों की शिरकत को अपने क्षेत्र की सुविधाओं और दायित्व के हनन के रूप में देखते हैं।

बार्कर : पर यह कोई नया कार्यक्षेत्र नहीं है। नारीवाद हमेशा से ही पुरुषों के साथ काम करने के बारे में था, फिर चाहे हमें इस बात का पता हो या न हो।

किमेल : 'लॉस ऑफ़ माई पाई' का यह डर पुरुषों व महिलाओं की आने वाली हर उस पीढ़ी के साथ पुनर्चक्रित होता है जो अपनी 'सुविधाओं' के खो जाने से नाराज़ होते हैं। इसको गंभीरता से लिया जाना चाहिए।

म्लुम्बा–न्गकक : हमें यह भी देखना चाहिए कि हम पुरुषों के साथ जुड़ाव बनाते समय ऐसे तरीके अपनाएं जो लैंगिक न्याय नियमों को मानते हों। क्या हम महिला अधिकार क्षेत्र के प्रति जवाबदेह हैं जिनके कारण यह काम संभव हो सका है?

किमेल : अगर पुरुष बिना जवाबदेही निभाए उस काम में कूद पड़ेंगे जिन्हें महिलाएं कई दशकों से करती आई हैं तो यह समस्यापूर्ण होगा। जवाबदेही की सामूहिक संरचनाएं विकसित करना महत्वपूर्ण है।

अल–फ़ेकी : ग्लोबल साउथ देशों में उन लोगों की ओर से एक नकारात्मक दबाव बन रहा है जो यह दलील देते हैं कि लैंगिक समानता जिसमें समलैंगिक अधिकार भी शामिल हैं एक 'पश्चिमी' विचार है। इस तर्क का स्वदेशीकरण हम कैसे करें जिससे यह दिखाया जा सके कि यह एक बाहरी हस्तक्षेप नहीं बल्कि ज़मीन से उभरने वाला विचार है।

बार्कर : हां, हम अनेक देशों में यह सुनते हैं कि ये संयुक्त राष्ट्र के कमरों में पकाए गए मनगढ़ंत विचार हैं।

किमेल : स्थानीय आवाज़ों को इसका व्यापक सैद्धांतिक ढ़ांचा तैयार करना चाहिए।

दीवान : भारत में महिला आंदोलन ने लैंगिक पहचान संबंधी मुद्दों को समर्थन किया, और समुदायों के बीच विश्वास के सेतु बनाए।

म्लुम्बा–न्गकक : मैं विदेशी भार समझे जाने वाले मुद्दों से जूझने के लिए स्थानीय आवाज़ों को उपयोग में लाने के महत्व पर सहमत हूं। परन्तु इसके साथ–साथ अधिकारों की सार्वभौमिकता को समर्थन प्रदान करना भी उतना ही ज़रूरी है जिससे हम कठिन परिस्थितियों में घिरे लोगों को सहयोग देने के दायित्व को यह कहकर न नकार सकें कि वह मुद्दा स्थानीय है। यहां पर 'एकजुटता' शब्द का विशेष महत्व है।

इस संश्लेषण के प्रकाशन में सहयोग दिया डिपार्टमेंट फ़ॉर इंटरनेशनल डिवलेपमेंट तथा नोराड ने।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:
सेंटर फ़ॉर हेल्थ एण्ड सोशल जस्टिस
यंग विमेन होस्टल न0 2 (बेसमेंट), एवेन्यू– 21ए, जी ब्लॉक, साकेत, नई दिल्ली– 110017
वेबसाईट: www.chsj.org, www.menengagedilli2014.net